Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मेरठ परिक्षेत्र की वीरांगनाओं का आजादी के समर में योगदान

डॉ. सचिन कुमार*

* एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास) डी0ए0वी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर, मॉ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।**
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वस्त्रफला क्रिया:'।।

नारी सदैव समाज में शक्ति व आस्था का स्वरूप मानी जाती रही है। वैदिक काल में हमें घोषा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, अपाला, गार्गी व अदिति जैसी विदुषी महिलाओं का वर्णन मिलता है। महाजनपदकाल में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित प्रजापिता गौतमी, आम्रपाली आदि भिक्षुणी का वर्णन भी मिलता है। मध्यकालीन भारतीय समाज में रजिया सुल्तान, जोधाबाई, गुलबदन बेगम आदि एवं आधुनिक भारतीय समाज में रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, बेगम हजरतमहल, दुर्गा भाभी, एनी बेसेन्ट, मैडम भीकाजी कामा, कल्पना दत्ता, प्रीतिलता वादेकर आदि वीरांगनाओं के बारे में इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में पढने और जानने को मिलता है।

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में महिलाओं का योगदान हमेशा अविस्मरणीय रहेगा। उन्होंने भारतीय समाज के हर वर्ग में राष्ट्रीयता व देशप्रेम की भावनाओं को जागृत करने में महती भूमिका निभाई थी। उन्होंने 1857 ई0 की क्रान्ति से लेकर 1947 ई0 की आजादी की बेला तक हुए अनेकों आन्दोलनों में प्रतिभाग किया था। उदाहरणार्थ, असहयोग आन्दोलन, बारडोली सत्याग्रह, नमक आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन आदि।

शब्द कुंजी – नमक आन्दोलन, मायादास, विधावती, उर्मिला शास्त्री, शास्त्री देवी, विलायती कपडे, पिकेटिंग, व्यापारी वर्ग।

शोध का औचित्य : प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से प्रयास किया गया है कि जितना अमूल्य योगदान महिलाओं ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में दिया है उनको भी इतिहास में वही स्थान व सम्मान प्राप्त हो जिसकी वह हकदार है। हमारी आने वाली पीढियां व समाज के सम्मानित नागरिक एवं शोध के क्षेत्र से जुडे शिक्षक व शोधार्थी भी उनके कार्यो से प्रेरित होने के साथ साथ उनके बताये मार्गो पर चल सके।

शोध विधि : प्रस्तुत शोधपत्र विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक विधि पर आधारित है इस शोध पत्र में प्राथमिक व द्वितीय स्रोतों का प्रयोग किया गया है।जैसे सरकारी रिपोर्ट, पुस्तक, शोधपत्र, पत्रिका, इन स्रोतों का सन्दर्भ ग्रहण करते हुए वर्णात्मक व्याख्या एवं सार्थक निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।

व्याख्या: भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन के राजनीतिक पटल पर महिलाओं की उपस्थिति गांधी जी के भारत आगमन के पश्चात लगातार बढती ही गयी। चूंकि गांधी जी ने अपने विचारों से आन्दोलन के यज्ञ में आहुति डालने के लिए सबको प्रेरित करने का प्रयास किया था। गांधी जी का मानना था कि पुरूष एवं महिला सभी समान है उनमे रंग, क्षेत्र, भाषा, धर्म आदि के आधार पर भेद नही करना चाहिए।

जब भी आजादी के बारे में संवाद होता है तो उत्तर प्रदेश का नाम सबसे पहले आता है आजदी के पूर्व इस प्रान्त को संयुक्त प्रान्त बोला जाता था इसी प्रान्त से जुडी कुछ वीरांगनाओं के योगदान की चर्चा जब हम करते है तो उनसे सम्बन्धित साक्ष्यों का अभाव सा देखने को मिलता है। हमें कुछ प्रमाणिक जानकारियों के लिए उनकी आत्मकथाओ व संस्मरणों पर ही निर्भर रहना पडता है। महिला सेनानियों से सम्बन्धित दस्तावेजों को या तो ब्रिटिश शासन द्वारा नष्ट कर दिया गया होगा या फिर उनसे सम्बन्धित साहित्य सजृन नही किया गया होगा। आजादी के पश्चात इतिहास लेखन में भी महिलाओं को वह उचित स्थान नही दिया गया जिसकी वह पूर्ण हकदार थी। स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुडी महिलाओं की अप्रत्यक्ष गतिविधियों में अधिक सक्रियता रहती थी बजाय प्रत्यक्ष गतिविधियों के। क्योंकि प्रारम्भ में ब्रिटिश शासक वर्ग उन पर सन्देह नही करता था वह एक तरह से जासूसी का कार्य करती थी। वह गोपीनीय जानकारियों और उनसे सम्बन्धित दस्तावेजों को एक स्थान से दूसरे स्थानों पर बहुत आसानी से पहुँचा देती थी।

इसके अतिरिक्त कुछ महिला सेनानियो ने अहिंसा के मार्ग पर चलकर प्रभात फेरियो, जूलूसों व धरनों आदि के माध्यम से विदेशी शक्ति का मुकाबला किया। उन्होने अपने आन्दोलन को अविरल गति से चलाने हेतु कुछ आन्दोलनकारी संगठनों को भी निर्मित किया था।

1. महिला संघ
2. महिला सत्याग्रह समिति
3. चरखा संघ

महिला आन्दोलनकारियों ने अपनी सुझ-बूझ का परिचय देते हुए अपनी गतिविधियों को अंजाम तक पहुँचाने का प्रयास किया साथ ही उन्होंने गुप्त रूप से आम लोगों में आजादी की लौ जलाने का भी प्रयास किया था। गांधी जी के नेतृत्व में हुए आन्दोलनों जैसे असहयोग आन्दोलन, बारदोली

सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोडो आन्दोलन आदि में महिलाओं की उत्कृष्ट रूप से भागीदारी देखने को मिलती है। गांधी जी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय मेरठ की वीर महिलाओं ने भी ने बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी ली थी तथा अपने आस पास के परिवेश में जनजागरण फैलाने का अदम्य साहस दिखाया था। इस आन्दोलन में अहिंसा पर पूर्ण बल दिया गया था। आन्दोलनकारी महिलाओं में मुख्य रूप से विधावती, उर्मिला शास्त्री, प्रकाशवती सूद एवं कुसुमलता गर्ग आदि थी। इनमें से अधिकांश संभ्रान्त घरों से थी, जो घर की चाहर दीवारी को लाघकर पर्दा त्यागकर बाहर निकल आयी थी[1]। सभी महिलाऐ मिलकर मोहल्लों में नुक्कड सभाओं का आयोजन करती व उसमें अपने ओजस्वी भाषणों द्वारा आम जनमानस में आजादी के प्रति जोश भरती थी। प्रभात फेरियो व पिकेटिंग के माध्यम से विदेशी कपडो की दुकानों और शराबबन्दी व नमक कानून उल्लघंन के बारे लोगों को जागरूक करती थी।[2]

12 मार्च 1930ई0 को महिला संगठनों द्वारा मेरठ में एक सभा का आयोजन किया गया था जिसमे सैकडो की संख्या में महिला सदस्यों ने पुरे जोश के साथ अपनी सहभागिता की थी। इस सभा की अध्यक्षता का दायित्व तत्कालीन समय की महान स्वतन्त्रता सेनानी उर्मिला शास्त्री जी को दिया गया था।[3] इस सभा में विदेशी शाक्ति के विरूद्ध अनेकों प्रस्ताव पारित किये गये थे जैसे स्वदेशी वस्तुओ को बढावा, नशाखोरी पर रोक, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार आदि। इस प्रकार कि बैठकों में महिला हिस्सेदारी के कारण ही सामान्य नारी शाक्ति में भी विश्वास का पैमाना बढने लगा था और उनके होसलों में भी वृद्धि का भाव झलकने लगा था। इस घटना के पश्चात 17 जुलाई 1930 ई0 को ब्रिटिश पुलिस द्वारा उर्मिला शास्त्री जी को गिरफ्तार करके उन्हे न्यायालय के सामने प्रस्तुत किया गया और उन पर आरोप लगाया कि उन्होने दुकानों के सामने पिकेंटिग व छात्रों को आन्दोलन के लिए उकसाया है। न्यायाधीश ने उनके समक्ष एक प्रस्ताव रखा कि अगर वह क्षमा माग ले तो उन्हें छोड दिया जायेगा[4] लेकिन शास्त्री जी ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया इसके बाद जज साहब ने छ: माह के कारावास की सजा सुनाई।

इसी क्रम में 11 अप्रैल 1930 ई0 को एक सभा हापुड परिक्षेत्र की नारीशक्ति द्वारा भी की गई और उसमें चर्चा व परिचर्चा के पश्चात कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। जिसमें विदेशी वस्त्रों व शराब की दुकानों का पुरजोर विरोध करना था और स्वदेशी को बढावा देने के साथ साथ सूत कातने के लिए भी महिलाओं को प्रेरित किया गया[5]। महिलाओं द्वारा शराब व विदेशी कपडों की दुकानों पर पिकेटिंग करना इतना अधिक प्रभावशाली रहा कि विलायती वस्त्रों के विक्रेताओं ने स्वयं मिलकर ही यह तय किया कि वह एक वर्ष तक विलायती कपडा अपनी दूकानों पर नहीं बेचेगें[6]। महिलाओं के इन साहसिक कार्यो से आम जनमानस के हौसलों में लगातार वृद्धि हो रही थी और वह भी अब महिला शाक्ति के साथ आकर खडा हो गया था।

आगे चलकर कुछ विदेशी कपडों के अन्य व्यापारियों को भी अपने ऊपर ग्लानि महसूस होने लगी थी और उन्होने भी विदेशी वस्त्रों को बेचना ही बन्द कर दिया था[7]। इसमें हिन्दू और मुस्लिम व्यापारी एक साथ थे। इससे हिन्दू मुस्लिम एकता भी समाज में दिखाई दे रही थी। महिलाओं के इस आन्दोलन को तत्कालीन छात्रों का भी सहयोग प्राप्त हुआ उन्होंने आन्दोलन के प्रचार प्रसार हेतु प्रत्येक स्थानो पर छोटे छोटे पम्पलेट बॉटे। छात्रों ने अपनी परीक्षा तक त्याग दी तथा कुछ सगंठनों का भी निर्माण किया। जैसे-

1. हिन्दुस्तानी सेवा दल
2. यंग कामरेड लीग
3. स्टूडेन्ट खादी लीग

जिससे समाज में प्रचार प्रसार हो सके और आम जनमानस आन्दोलन से जुड सके[8]।

ब्रिटिश सरकार की गुप्तचर शाखा ने एक रिर्पोट में बताया कि मेरठ परिक्षेत्र के 75 प्रतिशत स्टूडेन्ट आन्दोलन में भाग ले रहे है[9]।

इसके अतिरिक्त स्वदेश निर्मित खादी को प्रोत्साहित करने व पहने हेतु महिलाओं ने घर घर जाकर जनसामान्य को प्रेरित किया जिससे घरेलू उत्पाद बाजार में विदेशी उत्पाद से मुकाबला कर सके। जिससे हमारा कृषक समाज समृद्ध हो सके और कृषि पलायन न हो।

आन्दोलनकारी महिलाओं में मुख्य रूप से विधावती,उर्मिला शास्त्री, प्रकाशवती सूद एवं कुसुमलता गर्ग का योगदान अतुलनीय था।इनके जनसामन्य द्वारा कुछ उपनाम भी रखे हुए थे जैसे- तूफान मेल,पंजाब मेल,कालका मेल[10]। सभी महिलाओं के अथक प्रयासों द्वारा विदेशी कपडो और शराब की दुकानों के बहिष्कार व नमक कानून उल्लघंन के बारे लोगों में जनजागरण फैलाया करती थी[11]।

इस तरह की गतिविधियों से ब्रिटिश सरकार की कानून व्यवस्था धवस्त सी हो गयी थी ।ब्रिटिश सरकार ने मेरठ नमक आन्दोलन को दबाने हेतू लगभग 6000 लोगों को कारागार में डाल दिया। मेरठ जिले की महिलाओं का इस तरह से राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेना एक महत्वपूर्ण बात थी इससे पूर्व वह इतनी सक्रिय कभी भी नही हुई थी[12]।

इसी समय सी0 आई0 डी0 विभाग की एक रिर्पोट सामने आयी जिसमें बताया गया की मेरठ परिक्षेत्र की महिलाओं कि हिस्सेदारी राजनैतिक गतिविधियों में भी लगातार बढती जा रही है। शासक वर्ग ने चिन्तित होकर महिलाओं पर भी मुकदमें चलाने प्रारम्भ कर दिय गये।कुछ महिलाओं को कठोर कारावास तक की सजा सुनाई तथा कुछ को चेतावनी देकर छोड़ दिया गया[13]।

निष्कर्ष : उपरोक्त शोधपत्र के सभी साक्ष्य स्पष्ट रूप से यह इंगित कर रहे है कि नमक आन्दोलन विदेशी वस्त्र व शराब बन्दी में मेरठ की महिला शक्ति ने सक्रिय भूमिका निभाई महिलाओं की भागीदारी से ही यह आन्दोलन कभी धीमा नही पड़ा। उन्होंने जेलों की यातनाओं से कभी भय नही खाया और वह निरन्तर आन्दोलन के पथ पर अग्रसर रही। इस शोध पत्र के माध्यम से सुझाव है कि महिला सेनानियों पर साहित्य सृजन अविरल गति से होना चाहिए ताकि शोध के क्षेत्र से जुडे लोगों को बिना किसी परेशानी साहित्य उपलब्ध हो सके बिना किसी कठिनाई के वह शोध के क्षेत्र में अपना योगदान दे सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. साक्षात्कार ,राधामोहन गर्ग
2. हिन्दुस्तान टाइम्स: 24 अप्रैल,1930
3. यू0पी0पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट,1930,पैरा 333डब्लू।
4. उर्मिला शास्त्री, माई डेज इन प्रिजन/कारागार,हार्पर कालिन्स पब्लिशर्स, नोयडा,2012,पृ0 2
5. हिन्दुस्तान टाइम्स 24 अप्रैल 1930

6. एस0 ए0 लखनऊ,यू0पी0 पुलिस डिपार्टमेंट प्रोसीडिग्स 1930, फाइल नं0151; यू0पी0पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट : 10 मई, 1930 पैरा 398;(एच)
7 लीडर, 12 जून, 1930
8 हिन्दुस्तान टाईम्स, 14 अप्रैल 1930
9 यू0पी0पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट : 10 मई, 1930,पैरा 407 (बी)
10 साक्षात्कार ,राधामोहन गर्ग
11 यू0पी0पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट, 1930 पैरा 420 (एच)।
12 यू0पी0पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट, 1930 पैरा 836 (वाई)
13 यू0 पी0 पुलिस सीक्रेट ऐब्सट्रेक्ट 17 मई 1930 पैरा 441(जी)

****